Nat. Volatiles & Essent. Oils, 2021;8(6):01-04

NVEO
Natural Volatiles &
Essential Oils

मेधाजनन संस्कार- मेधा बढाने की चिकित्सा

डॉ. दिलखुश पटेल[1*]
[1*]आचार्य व.ना.स.बेन्क लि. आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, वडनगर, जिला- महेसाणा, गुजरात पीन- 384355

मेधाजनन संस्कार- मेधा बढाने की चिकित्सा

मनुष्य बुद्धि के कारण ही अन्य प्राणिओं से अलग प्राणी है । बुद्धि, धी,मति,मेधा आदि शब्द पर्याय होने पर भी अलग-अलग विभावना रखते है। धीः धारणावती मेधा। जो ज्ञान प्राप्त करके उसकी धारणा रखती है वह बुद्धि ही मेधा है। मेधावी व्यक्ति की अवधान शक्ति शास्त्रो के अध्ययन के लिए उपकारक बनती है। अतः मनुष्य बालक जन्म होने पर जातकर्म संस्कार में मेधाजन संस्कार किया जाता है। उपनयन संस्कार के बाद गुरुकुल में आते ही गुरु शिष्य को मेधाजन संस्कार करता है। अथर्ववेद में मेध्यगण अनुसार मेधाजनन संस्कार के सम्बन्ध में कतीपय सूक्त प्राप्त होते है। यहाँ अथर्ववेद की शौनक संहिता का प्रथम सूक्त की समीक्षा मेधाजनन शक्ति की चिकित्सा के सन्दर्भ में की गई है। उसमें प्राप्त वाचस्पति और अशोस्पति शब्द केवल देवता वाचक नहीं वनस्पति वाचक है । वचा और मुनिवृक्ष के वाचक इन शब्दो के साथ भावप्रकाश, वैदक निघन्टु आदि ग्रन्थो के आधार पर मेध्य औषधि के द्रव्यगुणा विज्ञान अनुसार यहाँ वचा और अगस्ति वृक्ष के मेधाजनन से सम्बन्धित गुणधर्म का विवेचन यहाँ किया गया है। वरुण, अश्विनी आदि देवो का आह्वान भी मेधा शक्ति बढाने के लिए किया जाता है। वेदों में देवता वाचक नाम से वनस्पति का निर्देश किया जाता है। उसका समर्थन इस सूक्त से होता है इसकी चर्चा विस्तार से प्रस्तुत लेख में की गई है।

मनुष्य बुद्धिप्रधान प्राणी है। अतः अन्य प्राणियों से अलग प्राणी है। मनुष्य बुद्धि से भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है। इस ज्ञान को स्मरण रखनेवाली स्मरणशक्ति को मेधा कहते है। इस तरह मेधा स्मृति की धारणा शक्ति है।- 'धीः धारणावती मेधा।' धी शब्द सामान्यतः बुद्धि वाचक शब्द है। पदार्थ का ज्ञान पानेवाली बुद्धि कहलाती है। मति शब्द धी द्वारा वैचारिक प्रक्रिया सूचित है। बुद्धि द्वारा पाया गया ज्ञान स्थिर होने से मेधा बनती है। उत्कृष्ट प्रकार का ज्ञान स्थिर होने से प्रज्ञा बनतती है। वेद में कवित्त्व कि प्राप्ति को आदर्श माना गया है और मेधा के बिना मानव कवि नहीं । अथर्वा आदर्श कवि है, कारण वह मेधावी है। अथर्वण,आंगिरस,बृहस्पति,उशनस्,भरद्वाज आदि ऋषि-कवि परम मेधावी,धीर और मनीषि थे। साधारण लोगों में भी बुद्धि और मेधा होता है लेकिन जितनी तिव्रता ज्यादा इतना वह मनीषि बनता है। मेधा या स्मृति शक्ति का नाश होने से मनुष्य कि बुद्धि का नाश होता है। गीता में कहा है कि 'संमोह उत्पन्न होने से स्मृतिभ्रंश होता है, स्मृतिभ्रंश से बुद्धि क्षीण होती है और बुद्धि नष्ट होने से मनुष्य का विनाश होता है।' मन्- मनुते – विचार करने की शक्ति के कारण ही मनु के वंशज मानवी कहलाते है। समाज में मेधावी व्यक्ति गौरव व सन्मान प्राप्त करता है। अतः मातापिता अपनी सन्तान मेधावी बने ऐसी आशा और अपेक्षा रखते है। अतः संस्कारो में मेधाजनन संस्कार का महत्त्व रखा गया है।

शिशु के जन्म के बाद तुरन्त पिता द्वारा जातकर्म किया जाता है। जातकर्म संस्कार का प्रथम अंग सोष्यन्ति कर्म है। यह विधि सुखप्रसुति के लिये की जाति है। जन्म के बाद नालीछेदन शिशु के जातकर्म संस्कार का ही अंग है। इसके अन्तिम रूप में मेधाजनन संस्कार 'हिरण्य मधु सर्पिषा' किया जाता है। ये तीन द्रव्य मेध्य द्रव्य माने गये है। आयुर्वेद में सुवर्णप्राशनविधि भी मेधाजनन के लिये है।

अथर्ववेद की शौनक औऱ पैप्लाद दो संहिताऐं प्राप्त होती है। शौनकीय संहिता में मेधाजनन सुक्त चार मंत्रो का है, जो प्रथम है। पैप्लाद संहिता में शन्तो देवीमृष्टय आपो भवतु पीतय – प्रथम सूक्त है।

मेधाजनन सूक्त के ऋषि अथर्व और देवता वाचस्पति है। प्रथम तीन मंत्र का छन्द अनुष्टुप औऱ चतुर्थ मंत्र का चतुष्पाद उरु विराट् छन्द है।
कौशिक के अनुसार यह मेधाजनन सूक्त है। (कौ.सू.) कौशिक सूत्र के अनुसार उदुम्बर, पलाश और कर्कन्धू समिधाओं का होम, व्रीहि,यव और तिल का होम एवं प्राशन, दूध-ओदन प्राशन, रस पुराडाश भक्षण, उपाध्याय द्वारा कान में सूक्त मंत्र जप, शुक-सारिका एवं भारद्वाज पक्षी की जिह्वा बन्धन आदि प्रतीकोपचार बतायें गये हैं। (कौ.सू. 10.2-15)
मेधाजनन संस्कार वेदाध्ययन के पूर्व गुरु द्वारा शिष्य को किया जाता है।

कौशिक सूत्र में इस सूक्त का विनियोग ग्राम संपत् कर्म के लिये भी बताया गया है।(कौ.सू. 11. 17-18)
समिधाओं का होम वर्चस्य प्राप्ति के लिये बताया गया (कौ.सू.12-10) संग्रामविजय के लिये इस सूक्त का विनियोग बताया गया है।(कौ.सू. 14. 1-2) शान्ति पौष्टिक कर्मो के लिये भी कौशिक सूत्र में इसका विनियोग और विधान बताये गये हैं। (कौ.सू.18-1) तेजोव्रत के लिये भी यह सूक्त उपकारक है। (कौ.सू. 18. 19-22)

व्याधि दो प्रकार के माने गये हैं। आहारजन्य और पूर्वकर्मजन्य। आहारजन्य व्याधि के लिये वैद्यकीय चिकित्सा की जाति है। पूर्वकर्मजन्य व्याधि के लिये आथर्वण विधि विधान अनुसार होम,जलाभिमंत्रण अभिषेक बताये गये है। (कौ.सू. 25.1-5) माणवक के उषाकर्म(कौ.सू. 134-10) और राजा के पुष्याभिषेक के लिये सूक्त प्रयोग निर्दिष्ट है।(अथर्व परि.1.3.24)

सातवलेकर श्रीपाद दामोदरजी ने इस सूक्त में अध्ययन-अध्यापयन पद्धति का सूचन माना है। (द्रष्टव्य अथर्ववेद काण्ड-1, स्वाध्याय मंडल, किल्ला पारडी) छात्र पठाया हुआ स्मृति में रखें इस के लिये गुरु का मार्गदर्शन और पद्धति का निर्देश इस सूक्त में माना गया है। स्मृति के लिये मेध्य औषधि का सेवन आवश्यक है। धनुर्धारी की लक्ष्यसिद्धि, अभ्यास और वाचस्पति गुरु का मार्गदर्शन औऱ सानिध्य अपेक्षित है। हमारी गुरुकुल की शिक्षापद्धति में स्वाध्याय,आध्ययन-अध्यापन और अभ्यास तीन सोपान माने गये है। गुरुमुख पाठग्रहण स्वाध्याय से शंका का निरसन अध्ययन काल में करने के बाद अभ्यास की परम आवश्यकता रहती है। अभ्यास से अधीत चिरकाल तक स्थिर होने से छात्र मेधावी बनता है।
इस सूक्त के प्रथम मंत्र में वाचस्पति से तीन गुना सात-इक्कीस तत्त्वों की शक्ति पाने की प्राथना की गई है।

पंच तन्मात्रा,महत् और अहंकार इन सात तत्त्वों की साम्यावस्था, गतिशीलता और गतिहिनता इक्कीस तत्त्व होते हैं। (तै.आ.1-13-3) पूर्व के सिवा सात दिशायें, होतृ आदि सात ऋत्विक, बिना विवस्वत सात आदित्य मिलाकर इक्कीस अथवा सात ग्रह, सप्तर्षि और सात मरुदगण या महाभूत,ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय,पंच प्राण और अहंकार मिलकर इक्कीस की संख्या होती है। अंतिम अर्थ अधिक तर्कसंगत है।
दूसरे मंत्र में वाणी के स्वामी वाचस्पति से दिव्यज्ञान और वसोष्पति से प्राप्त ज्ञान स्थिर होने की प्राथना है। वेदों में देवो के नाम औषधि वाचक माने गये है। वाचस्पति देवता विद्या दाता गुरु के वाचक नहीं है अपितु वचा वनस्पति वाचक है। सामविधान ब्राह्मण में वचा को मेध्य मानी गइ है।(सामविधान ब्राह्मण 2.7.10-13) इस सूक्त में वाचस्पति शब्द का तीन बार उपयोग हुआ है।
वसोष्पति केवल वसु-धन का स्वामी नहीं धन विभव निवासस्थान का वाचक है। वसु का अर्थ अगस्ति-अगस्त्य है। मुनिवृक्ष अगस्ति के फूल मेध्य है। अष्टक वर्ग की यह वनस्पति वृद्धि और मालाकन्द नाम से प्रसिद्ध है। पुनर्वसु नक्षत्र में निमंत्रित करके पुष्य नक्षत्र में लाकर उसका उपयोग किया जाता सकता है।
पैप्लाद संहिता में वसोष्पति के स्थान पर असोष्पति पाठ लेने से असु-प्राण अर्थ लेने पर मेधा शक्ति बढाने के लिये प्राणायाम का महत्त्व समजा जा सकता है।
आयुर्वेद के निघंटु, चरक संहिता आदि ग्रंथो में ब्राह्मी ,शंखपुष्पी, भृङ्गराज आदि मेध्य वनस्पति की सूक्ति और औषधीयप्रयोग प्राप्त कर सकते है।
मेधा द्वारा वर्चस्य प्राप्ति होती है। अतः अथर्ववेद परिशिष्ट के वर्चस्यगण में इस सूक्त का समावेश किया गया है।(14)
गृह्यसूत्रो में भी इन्द्र, सरस्वती, अश्विनौ, अंगीरस सप्तर्षि समाधि, अग्नि, वायु, धाता, वरुण और सूर्य आदि से मेधा के लिये प्रार्थना की गई है।

मेध सूक्त यजुर्वेद के ३२वें अध्याय में मेधा-प्राप्ति के कुछ मन्त्र पठित हैं, जो मेधा-परक होने से 'मेधा-सूक्त' कहलाते हैं । 'मेधा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – धारणा शक्ति (JUDGEMENT POWER), प्रज्ञा (WISEFUL, INTELLECT), बुद्धि आदि । मेधा-शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति ही 'मेधावी' (INTELLIGENT, BRILLIANT) कहलाता है । 'मेधा' बुद्धि की एक शक्ति-विशेष है । जो गृहित-ज्ञान को धारण करती है और यथा-समय उसे व्यक्त भी कर देती है । इसी मेधा की प्राप्ति के लिये इन मन्त्रों में अग्नि, वरुण-देव, प्रजापति, इन्द्र, वायु, धाता आदि की प्रार्थना की गयी है । इन मन्त्रों के यथा-विधि पाठ से बुद्धि विशद बनती है और उसमें पवित्रता का आधान होता है । इस सूक्त का एक मन्त्र अत्यन्त प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है – षोडश संस्कारों में पुत्र-जन्म के अनन्तर जात-कर्म नामक एक संस्कार होता है, जो नालच्छेदन से पूर्व ही किया जाता है; क्योंकि नालच्छेदन के अनन्तर जननाशौच की प्रवृत्ति हो जाती है । जात-कर्म-संस्कार में मेधा-जनन तथा आयुष्य-करण – ये दो प्रमुख कर्म सम्पन्न होते हैं । बालक के मेधावी, बुद्धिमान् तथा प्रज्ञा-सम्पन्न होने के लिये घृत, मधु को अनामिका अँगुली (RING FINGER) से 'ॐ भूतस्त्वयि दधामि' आदि मन्त्रों द्वारा बच्चे को चटाया जाता है तथा उसके दीर्घ-जीवी होने के लिये बालक के दाहिने कान में अथवा नाभि के समीप 'ॐ अग्निरायुष्मान् ' इत्यादि मन्त्रों का पाठ होता है । इस प्रकार मेधा की वृद्धि की दृष्टि से इस 'मेधा-सूक्त' के मन्त्रों का बड़ा ही महत्त्व है । बुद्धि के मन्दता-रुपी दोष के निवारण

के लिये इन मन्त्रों का पाठ उपयोगी हो सकता है । कृष्ण-यजुर्वेदीय महानारायणोपनिषद् में भी एक मेधा-सूक्त प्राप्त होता है, उसमें भी मेधा-प्राप्ति की प्रार्थना है ।

सरस्वती देवी मेधा सूक्त (क)मेधासूक्त (ख)

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषं स्वाहा ।। १ ।।यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।। २ ।।मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।। ३ ।। इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् ।मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।४ [शुक्ल यजुर्वेद ३२।१३-१६]भावार्थः- यज्ञगृह के पालक, अचिन्त्य शक्ति से सम्पन्न, परमेश्वर की प्रिय कमनीय शक्ति अग्निदेव से मैं धन-ऐश्वर्य की तथा धारणावती मेधा की याचना करता हूँ । उसके निमित्त यह श्रेष्ठ आहुति गृहीत हो ।। १ हे अग्निदेव ! आप मुझे आज उस मेधा के द्वारा मेधावी बनाइये, जिस मेधा का देव-समूह और पितृ-गण सेवन करते हैं । आपके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है ।। वरुणदेव मुझे तत्त्वज्ञान को समझने में समर्थ मेधा पर्दान करें, अग्नि और प्रजापति मुझे मेधा प्रदान करें, इन्द्र और वायु मुझे मेधा प्रदान करें । हे धाता ! आप मुझे मेधा प्रदान करें । आप सब देवताओं के लिये मेरी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है ।। ३ब्राह्मण एवं क्षत्रिय – दोनों मेरी सम्पत्ति का उपभोग करें । देवगण मुझे उत्तम लक्ष्मी प्रदान करें । लक्ष्मी के निमित्त मेरे द्वारा दी गयी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित हो ।। ४

मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्य माना । त्वया जुष्टा नुदमाना दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः । त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया ।त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व द्रविणो न मेधे ।। १ ।। मेधां म इन्द्रो दधातु मेधां देवी सरस्वती । धां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ।अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः । मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषतां स्वाहा ।। २ ।।आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरुपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या । ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ।। ३ ।।[कृष्णयजुर्वेदीय महानारायणोपनिषद्] भावार्थः- प्रसन्न होती हुई देवी मेधा और सुन्दर मनवाली कल्याणकारिणी देवी विश्वाची हमारे पास आयें । आपसे अनुगृहित तथा प्रेरित होते हुए हम असद्भाषीजनों से श्रेष्ठ वचन बोलें और महापराक्रमी बनें । हे देवि ! आपका कृपा-पात्र व्यक्ति ऋषि (मन्त्र-द्रष्टा) हो जाता है, वह ब्रह्म-ज्ञानी और श्री-सम्पन्न हो जाता है । आप जिस पर कृपा करती हैं, उसे अद्भुत सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है । ऐसी हे मेधे ! आप हम पर प्रसन्न होवो और हमें द्रव्य से सम्पन्न करें ।।१ इन्द्र हमें मेधा प्रदान करें, देवी सरस्वती हमें मेधा-सम्पन्न करें, कमल की माला धारण करने वाले दोनों अश्विनीकुमार हमें मेधा-युक्त करें । अप्सराओं में जो मेधा प्राप्त होती है, गन्धर्वों के चित्त में जो मेधा प्रकाशित होती है, सुगन्ध की तरह व्यापिनी भगवती सरस्वती की वह दैवी मेधा-शक्ति मुझपर प्रसन्न हों ।।२अनेक रुपों में प्रकट सुरभि-रुपिणी, स्वर्ण के समान तेजोमयी, जगत् में सर्व-व्यापिनी, ऊर्जा-मयी और सुन्दर चिह्नों से सुसज्जित देवी मेधा ज्ञानरुपी दुग्ध का पान कराती हुई मुझपर प्रसन्न हों ।।३..... दसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषं स्वाहा ।। १ ।। यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।। २ ।।मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ।। ३ ।। इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम् । मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा ।।४ [शुक्ल यजुर्वेद ३२।१३-१६]भावार्थः- यज्ञगृह के पालक, अचिन्त्य शक्ति से सम्पन्न, परमेश्वर की प्रिय कमनीय शक्ति अग्निदेव से मैं धन-ऐश्वर्य की तथा धारणावती मेधा की याचना करता हूँ । उसके निमित्त यह श्रेष्ठ आहुति गृहीत हो ।। १ हे अग्निदेव ! आप मुझे आज उस मेधा के द्वारा मेधावी बनाइये, जिस मेधा का देव-समूह और पितृ-गण सेवन करते हैं । आपके लिये यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है ।। २ वरुणदेव मुझे तत्त्वज्ञान को समझने में समर्थ मेधा पर्दान करें, अग्नि और प्रजापति मुझे मेधा प्रदान करें, इन्द्र और वायु मुझे मेधा प्रदान करें । हे धाता ! आप मुझे मेधा प्रदान करें । आप सब देवताओं के लिये मेरी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित है ।। ३ ब्राह्मण एवं क्षत्रिय – दोनों मेरी सम्पत्ति का उपभोग करें । देवगण मुझे उत्तम लक्ष्मी प्रदान करें । लक्ष्मी के निमित्त मेरे द्वारा दी गयी यह श्रेष्ठ आहुति समर्पित हो ।। ४.....

मेधा सूक्तयजुर्वेद के ३२वें अध्याय में मेधा-प्राप्ति के कुछ मन्त्र पठित हैं, जो मेधा-परक होने से 'मेधा-सूक्त' कहलाते हैं । 'मेधा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – धारणा शक्ति (JUDGEMENT POWER), प्रज्ञा (WISEFUL, INTELLECT), बुद्धि आदि । मेधा-शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति ही 'मेधावी' (INTELLIGENT, BRILLIANT) कहलाता है । 'मेधा' बुद्धि की एक शक्ति-विशेष है । जो गृहित-ज्ञान को धारण करती है और यथा-समय उसे व्यक्त भी कर देती है । इसी मेधा की प्राप्ति के लिये इन मन्त्रों में अग्नि, वरुण-देव, प्रजापति, इन्द्र, वायु, धाता आदि की प्रार्थना की गयी है । इन मन्त्रों के यथा-विधि पाठ से बुद्धि विशद बनती है और उसमें पवित्रता का आधान होता है । इस सूक्त का एक मन्त्र अत्यन्त प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है – षोडश संस्कारों में पुत्र-जन्म के अनन्तर जात-कर्म नामक एक संस्कार होता है, जो नालच्छेदन से पूर्व ही किया जाता है; क्योंकि नालच्छेदन के अनन्तर जननाशौच की प्रवृत्ति हो जाती है । जात-कर्म-संस्कार में मेधा-जनन तथा आयुष्य-करण – ये दो प्रमुख कर्म सम्पन्न होते हैं । बालक के मेधावी, बुद्धिमान् तथा प्रज्ञा-सम्पन्न होने के लिये घृत, मधु को अनामिका अँगुली

(RING FINGER) से 'ॐ भूतस्त्वयि दधामि' आदि मन्त्रों द्वारा बच्चे को चटाया जाता है तथा उसके दीर्घ-जीवी होने के लिये बालक के दाहिने कान में अथवा नाभि के समीप 'ॐ अग्निरायुष्मान् ' इत्यादि मन्त्रों का पाठ होता है । इस प्रकार मेधा की वृद्धि की दृष्टि से इस 'मेधा-सूक्त' के मन्त्रों का बड़ा ही महत्त्व है । बुद्धि के मन्दता-रुपी दोष के निवारण के लिये इन मन्त्रों का पाठ उपयोगी हो सकता है । कृष्ण-यजुर्वेदीय महानारायणोपनिषद् में भी एक मेधा-सूक्त प्राप्त होता है, उसमें भी मेधा-प्राप्ति की प्रार्थना है ।

सरस्वती देवी मेधा सूक्त (क)मेधासूक्त (ख)

मेधादेवी जुषमाणा न आगाद्विश्वाची भद्रा सुमनस्य माना ।त्वया जुष्टा नुदमाना दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे सुवीराः । त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया । त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु सा नो जुषस्व द्रविणो न मेधे ।। १ ।।मेधां म इन्द्रो दधातु मेधां देवी सरस्वती ।मेधां मे अश्विनावुभावाधत्तां पुष्करस्रजा ।अप्सरासु च या मेधा गन्धर्वेषु च यन्मनः ।दैवीं मेधा सरस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषतां स्वाहा ।। २ ।। आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरुपा हिरण्यवर्णा जगती जगम्या ।ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् ।। ३ ।।[कृष्णयजुर्वेदीय महानारायणोपनिषद्]

भावार्थः- प्रसन्न होती हुई देवी मेधा और सुन्दर मनवाली कल्याणकारिणी देवी विश्वाची हमारे पास आयें । आपसे अनुगृहित तथा प्रेरित होते हुए हम असद्भाषीजनों से श्रेष्ठ वचन बोलें और महापराक्रमी बनें । हे देवि ! आपका कृपा-पात्र व्यक्ति ऋषि (मन्त्र-द्रष्टा) हो जाता है, वह ब्रह्म-ज्ञानी और श्री-सम्पन्न हो जाता है । आप जिस पर कृपा करती हैं, उसे अद्‌भुत सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है । ऐसी हे मेधे ! आप हम पर प्रसन्न होवो और हमें द्रव्य से सम्पन्न करें ।।१ इन्द्र हमें मेधा प्रदान करें, देवी सरस्वती हमें मेधा-सम्पन्न करें, कमल की माला धारण करने वाले दोनों अश्विनीकुमार हमें मेधा-युक्त करें । अप्सराओं में जो मेधा प्राप्त होती है, गन्धर्वों के चित्त में जो मेधा प्रकाशित होती है, सुगन्ध की तरह व्यापिनी भगवती सरस्वती की वह दैवी मेधा-शक्ति मुझपर प्रसन्न हों ।।२अनेक रुपों में प्रकट सुरभि-रुपिणी, स्वर्ण के समान तेजोमयी, जगत् में सर्व-व्यापिनी, ऊर्जा-मयी और सुन्दर चिह्नों से सुसज्जित देवी मेधा ज्ञानरुपी दुग्ध का पान कराती हुई मुझपर प्रसन्न हों ।।३